संज्ञान तथा संवेग

CTET 2015 Exam Notes : Child Development and Pedagogy (CDP) in Hindi Medium

बच्चो में संज्ञान

संज्ञानात्मक विकास का अर्थ- संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के अन्तर्गत बच्चे का चिंतन, बुद्धि तथा भाषा में परिवर्तन आता है। इन तीनों परिवर्तनों में संवेदन, प्रत्यक्षीकरण, प्रतिमा-धारण , समस्या-समाधन, चिन्तन, प्रक्रिया, तर्क-शकित जैसी महत्त्वपूर्ण प्रक्रियाएँ शामिल होती हैं। संज्ञानात्मक विकास प्रक्रियाएँ ही विकासमान बालक को कविताएँ याद करने, गणित की समस्या को हल करने के तरीके के बारे में सोचने व निर्णय लेने, कोई अच्छी व सृजनात्मक रणनीति बनाने व क्रमागत अर्थपूर्ण वाक्य बनाने जैसे कार्यो हेतु योग्य बनाती हैं।

इस प्रकार संज्ञानात्मक विकास से तात्पर्य बालकों में संवेदी सूचनाओं को ग्रहण करके उस पर चिन्तन करने तथा क्रमिक रूप से उसे इस लायक बना देने से होता है जिसका प्रयोग विभिन्न परिसिथतियों में करके वे तरह-तरह की समस्याओं का समाधन आसानी से कर सकते हैं।संज्ञान का अर्थ जानना और जानना ज्ञान का अभिन्न अंग है। इसलिए शैक्षणिक प्रक्रियाओ में अधिगम मुख्य केंद्र संज्ञानात्मक क्षेत्र होता है

ब्लूम के वर्गीकरण का संज्ञानात्मक क्षेत्र

संज्ञानात्मक डोमेन (ब्लूम,1956) में ज्ञान तथा बौद्धिक कौशलों का विकास शामिल है। इसमें विशेष तथ्यों का पुनर्स्मरण या पहचान, प्रक्रियागत स्वरूप एवं परिकल्पनाएं शामिल हैं जो बौद्धिक क्षमताओं तथा कौशलों के विकास में मदद करती हैं। कुल छः मुख्य श्रेणियां हैं, जो सरलतम से आरम्भ होकर सबसे जटिल तक के क्रम में नीचे सूचीबद्ध हैं। इन श्रेणियों को कठिनाइयों की कोटियों के रूप में सोचा जा सकता है। यानि, इसके पहले कि दूसरा सीखा जाए, पहले पर महारथ हासिल करनी होगी।

श्रेणी	उदाहरण एवं सूचक शब्द
ज्ञान: आंकड़े या जानकारी याद करना।	**उदाहरण** : कोई नीति बोलें। स्मृति द्वारा ग्राहक को मूल्य बताएं। सुरक्षा नियमों की जानकारी रखें। **सूचक शब्द**: परिभाषित करता है, वर्णन करता है, पहचान करता है, जानता है, लेबल्स, सूचियां, मिलान, नाम, रूपरेखाएं, याद रखकर दोहराता है, पहचानता है, पुनरुत्पादित करता है, चुनता है, अवस्थाएं।
समझ- **बूझ**: अनुवाद, प्रक्षेप, एवं निर्देशों के अर्थ समझ ना तथा समस्याओं की व्याख्या। अपने शब्दों में समस्या का कथन।	**उदाहरण** : टेस्ट राइटिंग के सिद्धांतों का पुनर्लेखन। एकजटिल का र्य करने के चरणों का स्वयं के शब्दों में वर्णन करना। एक समीकरण का कम्प्यूटर स्प्रेडशीट में अनुवाद करता है। **सूचक शब्द**: समझता है, परिवर्तित करता है, बचाव करता है, अंतर करता है, अनुमान करता है, वर्णन करता है, सामान्यीकरण करता है , उदाहरण देता है, निष्कर्ष निकालता है, व्याख्या करता है, सविस्तार व्याख्यान करता है, अनुवाद करता है, भविष्यवाणी करता है, पुनर्ले खन करता है, सारांश देता है, अनुवाद करता है।
अनुप्रयोग: किसी परिकल्पना का नई परिस्थिति में उपयोग या एक अमूर्त कल्पना का स्वतः उप योग करें। कक्षा में सीखी गईबातों का कार्यस्थल पर नई स्थितियों मेंअनुप्रयोग होता है।	**उदाहरण** : किसी कर्मचारी की छुट्टी की अवधि की गणना के लिए ए क मैनुअल का उपयोग करें। एक लिखित परीक्षा की विश्वसनीयता के आकलन के लिए सांख्यिकी केसिद्धांतों का अनुप्रयोग करें। **सूचक शब्द**: अनुप्रयोग करता है, बदलाव, गणना करता है, निर्माण करता है, प्रदर्शित करता है, खोज करता है, हेरफेर करता है, रूपांतरण करता है, भविष्यवाणी करता है, तैयार क रता है, उत्पादित करता है, सम्बन्ध स्थापित करता है, दिखाता है, ह ल करता है, उपयोग करता है।
विश्लेषण: वस्तु या परिकल्पना को विभिन्न भा	**उदाहरण** : तार्किक अनुमान द्वारा एक उपकरण की समस्या दूर क

गों में अलग करता है ताकि उसका संगठनात्मक ढांचा समझा जा सके। तथ्यों एवं निष्कर्षों के बीच अंतर कर सकता है।	तर्कों में तार्किक दोष पहचानना। किसी विभाग से सूचना एकत्रित करता है तथा प्रशिक्षण के लिए आवश्यक कार्य चुनता है। **सूचक शब्द**: विश्लेषण करता है, विखंडित करता है, तुलना करता है, विषमता दिखलाता है, चित्र, विनिर्माण, अंतर करता है, भेद करता है, अंतर करता है, पहचानता है,दर्शाता है, निष्कर्ष करता है, रूपरेखा बनाता है, सम्बन्ध स्थापित करता है, चुनता है, अलग-अलग करता है।
संश्लेषण: विविध तत्वों से एक ढांचा यापैटर्न बनाता है। एक नए अर्थ या ढांचे परज़ोर देकर हिस्सों को जोडकर सम्पूर्ण बनाता है।	**उदाहरण** : किसी कम्पनी के ऑपरेशन या प्रक्रिया कामैनुअल लिखना। एक विशिष्ट कार्य के लिए एक मशीनडिज़ाइन करना। एक समस्या के हल के लिए स्रोतों से प्राप्त प्रशिक्षण को एकीकृत करता है। नतीज़े की बेहतरी के लिए प्रक्रिया में संशोधन करता है। **सूचक शब्द**: श्रेणीबद्ध करता है, मिलाता है, एकत्रित करता है, तैयार करता है, बनाता है, सृजित करता है, डिज़ाइन करता है, वर्णन करता है, जनित करता है, संशोधित करता है, संगठित करता है, योजना बनाता है, पुनर्व्यवस्थित करता है, पुनर्निर्माण करता है, सम्बन्ध स्थापित करता है, पुनर्संगठित करता है, दोहराता है, पुनर्लेखन करता है, सारांशीकृत करता है, बताता है,लिखता है।
मूल्यांकन: विचारों तथा सामग्रियों के मूल्य पर निर्णय करना।	**उदाहरण** : सबसे असरदार हल चुनना। सबसे योग्य उम्मीदवार चुनना। एक नए बजट का वर्णन करना तथा औचित्य सिद्ध करना। **सूचक शब्द**: मूल्यांकन करता है, तुलना करता है, निष्कर्ष निकालता है, विषमता पहचानता है, आलोचना करता है, आलोचक, बचाव करता है, वर्णन करता है, भेद करता है, आकलन करता है, वर्णन करता है, व्याख्या करता है, औचित्य सिद्ध करता है, सम्बन्ध बनाता है, सारांशीकृत करता है, समर्थन करता है।

पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत

पियाजे के अनुसार बच्चा अपने वातावरण के साथ अन्तक्रिया के परिणामस्वरूप ही सीखता है। संज्ञानात्मक विकास से तात्पर्य चिंतन में गुणात्मक परिवर्तन से है तथा यह परिवर्तन पहले से उपसिथत संज्ञानात्मक संरचनाओं में अनुकूलन द्वारा होता है। यह परिवर्तन अपरिहार्य व अपरिवर्तनीय तथा जैव-निर्धरित होता है।

संक्षेप में पियाजे के अनुसार बालकों में वास्तविकता के स्वरूप में चिंतन करने, उसकी खोज करने, उसके बारे में समझ बनाने तथा उनके बारे में सूचनाएँ एकत्रित करने की क्षमता, बालक के परिपक्वता स्तर तथा बालक के अनुभवों की पारस्परिक अन्त: क्रिया द्वारा निर्धारित होती है।बालक अपने विश्व की ज्ञान रचना में 'स्कीमा का प्रयोग करता है।

- संज्ञानात्मक विकास की संकल्पनाऐ - स्कीमा , आत्मसातीकरण , समायोजन व साम्यधारण
- पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत

बच्चो में संवेग

www.tetsuccesskey.com

बच्चो में संवेग

बच्चों का संवेगात्मक वातावरण, उसके व्यकितत्व के भावात्मक तत्त्व और निशिचत पदार्थों, व्यकितयों और परिसिथतियों के प्रति उसके भाव से निर्मित होता है। जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है और विकसित होता है, उसके अनुभव तथा ज्ञान की सीमा विस्तृत होती जाती है, उसकी अन्योन्यक्रिया बढ़ती जाती है तथा उसे प्रभावित करने वाले व्यकितयों की संख्या भी बढ़ती जाती है। अपने माता-पिता, मित्रा, भाई-बहन, शिक्षक और अन्य महत्त्वपूर्ण व्यकितयों से उसके पारस्परिक संबंध् और उनके प्रति अपनी संवेदनाओं के द्वारा ही बच्चा प्रमुख रूप से निर्देशित होता है। क्या बच्चा इन सबके बारे में अच्छा महसूस करता है? क्या इनकी उपेक्षा करता है? क्या उनसे स्नेह का भाव रखता है? क्या वह अपनी छोटी बहन या भाई से ईष्र्या करता है? ये सभी प्रश्न बच्चे के भावात्मक पक्ष को दर्शाते हैं।

www.tetsuccesskey.com

बच्चों की संवेदना महत्त्वपूर्ण होती है, यह उसके पारस्परिक संबंधें की दिशा तथा उत्कृष्टता का निर्धरण कर उसके स्वभाव को निशिचत रूपरेखा प्रदान करती है। एक बच्चा जो अपनी माँ से स्नेह करता है, उसे खुश करने के लिए वह सब कुछ करता है जो वह कर सकता है, इसके विपरीत यदि वह किसी व्यकित से घृणा करता है तो उसका व्यवहार बहुत नकारात्मक तथा घृणा से भरा हुआ होगा।

संवेग की प्रकृति **सकारात्मक तथा नकारात्मक** दोना॰ प्रकार की होती है। वे संवेग जो प्रेम, प्रशंसा, दया तथा खुशी जैसे सकारात्मक परिणाम के रूप में व्यवहार में नजर आते हैं, उन्हें सकारात्मक संवेग कहते है। दूसरी तरपफ जो अवांछित, अप्रीतिकर और हानिकारक व्यवहार जैसे ईष्र्या, क्रोध्, घृणा इत्यादि के रूप में दृषिटगत होते हैं उन्हें नकारात्मक संवेग कहते हैं।

www.tetsuccesskey.com

- मानव विकास के आयाम

संवेग का विकास-

संवेग का विकास-

संवेगात्मक विकास विशिष्ट और व्यक्तिपरक होता है परंतु सामान्य रूप में कुछ प्रवृतियाँ सभी बच्चों में मौजूद होती हैं। सभी जानते हैं कि नवजात बच्चा अत्यधिक उत्तेजित होता है और उसके संवेग विसरित और सामान्य रूप में अभिव्यक्त होते हैं। प्रारंभिक बाल्यावस्था में, संवेग जैसे क्रोध् भय और प्रेम, स्वतंत्रारूप से, अल्प अवधि के लिए तथा स्वाभाविक रूप से व्यक्त किए जाते हैं। जबकि वयस्कों का स्वभाव अपेक्षाकृत जटिल होता है उनके संवेग मिश्रित होते हैं, दमित होते हैं, इनके संवेगों में भावों को व्यक्त करने से रोका जाता है और वे अपेक्षाकृत लंबे समय तक बने रहते हैं। संवेगों का विकास, बाल्यावस्था के सहज, स्वतंत्रा तथा संक्षिप्त अभिव्यक्त संवेगों से वयस्क अवस्था के जटिल, लंबे समय तक चलने [illegible] न करता है।

संवेगात्मक विकास, संज्ञानात्[illegible]ों का अनुसरण नहीं करता है। इसी प्रकार कोई संवे[illegible]क्या नहीं होती है। इसलिए प्रत्येक बच्चे को उसर्व[illegible]ा जाना चाहिए न कि समूह मानदण्ड के आधर पर। [illegible]होते हैं। उदाहरणस्वरूप, एक माँ जो अ[illegible]र बच्चे में दो अलग-अलग प्रकार के संवेग उत्पन्न[illegible]ो वह सजा के प्रति प्रतिक्रिया नहीं व्यक्त करेगा[illegible]अपनी माँ के साथ सुरक्षा का भाव महसूस नही क[illegible]ति बहुत तीव्र घृणा का भाव विकसित कर सकता है।

Cinema_Plus_3.1rV03.11 Ads

बच्चों में 'संवेगात्मक परिपक्वता से ज्यादा महत्त्वपूर्ण अवधरणा 'संवेगात्मक स्वास्थ्य है। 'संवेगात्मक-परिपक्वता, अपने संवेगों को समाज के द्वारा स्वीकार्य बनाने के लिए किये जाने वाले नियंत्राण की क्षमता को प्रदर्शित करती है या एक अहानिकर तरीका जो केवल युवावस्था में स्वयं को व्यक्त करने की क्षमता है जबकि 'संवेगात्मक स्वास्थ्य किसी भी निर्दिष्ट समय में व्यकित की संवदेनात्मक अवस्था को दर्शाता है। सकारात्मक संवेगात्मक संवेग ही महसूस करना चाहिए। जबकि भय और क्रोध् जैसे संवेगों की अनुभूति बिल्कुल स्वाभाविक है, परन्तु इनकी अत्यधिक प्रभावशीलता तथा महत्ता व्यकित के 'संवेगात्मक-स्वास्थ्य को कठिनाई में डाल देती है, जबकि भय और क्रोध् से भी ज्यादा विनाशकारी चिंता का भाव होता है। जहाँ भय विशिष्ट होता है तथा किसी वस्तु, व्यकित या परिसिथति से संबंधित हो सकता हैं, वहीं चिन्ता विसरित तथा सामान्यीत महसूस होती है।

सामान्यत: चिन्ता के भाव से मुक्त होने के बजाय व्यकित के लिए किसी विशेष भय को नियंत्रित करना या उसे दूर करना ज्यादा आसान होता है। अपनी व्यापक प्रगति के कारण, बहुत से मानसिक स्वास्थ्य-विज्ञानी, चिन्ता को मनुष्य के दु:ख और समायोजन में आने वाली कठिनाई के रूप में देखते हैं जो तनाव और दु:ख उत्पन्न करती है। इस प्रकार, सकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य चिरकालिक भय, क्रोध्, तनाव तथा चिन्ता से मुक्त एक अवस्था है।

<<< बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र

नोट: आपको हमारी पोस्ट कैसी लगी, कृपया कमेंट करके ज़रूर बताए ।

Saba Pasha

Saba Pasha is the founder and CEO of TET Success Key. She created one of the best site for exam preparation.Here you can find latest exam updates and free study material for your exam preparation.